© M. K. Pandey

।। जन्म पत्रिका ।।

Jyotish and Research

" भ्रम से दूर केवल ज्योतिष "



।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

नाम : संगीता वर्मा

स्थान : दिल्ली (भारत)

जन्म समय : 15/ 02/ 1983 | 20: 24

जन्म विवरण

नाम	संगीता वर्मा
दिनांक	15 - 02 - 1983
समय	08 : 24 रात्रि
स्थान	दिल्ली (भारत)
लिंग	महिला
अयनांश	लाहिरी (023°37’14”)
डी एस टी	0
मंगल दोष	हां (निम्न)
राशि	मीन
आयू	40 व 0 मा 9 दि
दशा भोग्य	गु 1 व 10 मा 7 दि

दैनिक पंचांग

पक्ष	शुक्ल
तिथि	तृतीय
नक्षत्र(च)	पूर्वाभाद्रपद (4)
हिन्दू दिन	मंगलवार
अंग्रेजी दिन	मंगलवार
योग	सिद्ध
करण	तैतिल
सूर्य उदय	06 - 59 - 58
सूर्य अस्त	18 - 10 - 42

व्यक्ति विवरण

लिंग	**स्त्री**
जन्म दिनांक	15/02/1983
जन्म समय	08:24 रात्रि
इष्ट काल	033-03-05
जन्म स्थान	दिल्ली
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	28 : 40 : N
रेखांश	77 : 13 : E
स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
स्थानीय औसत समय	20 : 02 : 52
जन्म समय - जी एम टी	14 : 53 : 59
तिथि	तृतीया
हिंदु दिन	मंगलवार
पक्ष	शुक्ल
करण	तैतिल
सूर्योदय	06 : 59 : 58
सूर्यास्त	18 : 10 : 42
दिन अविधि	11 : 10 : 44

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	पद
लग्न	कन्या	02°38'36"	उ0फाल्गुनी	(2)
सूर्य	कुंभ	02°44'52"	धनिष्ठा	(3)
चंद्र	मीन	01°47'18"	पूर्वाभाद्रपद	(4)
मंग	कुंभ	29°07'38"	पूर्वाभाद्रपद	(3)
बुध	मकर	07°53'34"	उ0षाा	(4)
गुरु	वृश्चिक	14°53'37"	अनुराधा	(4)
शुक्र	कुंभ	27°23'46"	पूर्वाभाद्रपद	(3)
शनि (व)	तुला	10°49'18"	स्वाती	(2)
राहु (व)	मिथुन	07°49'14"	आद्र्रा	(1)
केतु (व)	धनु	07°49'14"	मूल	(3)
यूरे	वृश्चिक	15°12'18"	अनुराधा	(4)
नेप	धनु	05°02'46"	मूल	(2)
प्लूटो (व)	तुला	05°49'52"	चित्रा	(4)

अवकहड़ा चक्र

पाया (नक्षत्र आधारित)	तांबा
वर्ण	ब्राहमण
योनी	सिंह
गण	मानव
वश्य	जलचर
नाड़ी	आदि
दशा भोग्य	गुरू 1 व 10 मा 7 दि
लग्न	कन्या
लग्न स्वामी	बुध
राशि	मीन
राशि स्वामी	गुरू
नक्षत्र-पद	पूर्वाभाद्रपद-4
नक्षत्र स्वामी	गुरू
जुलियन दिन	2445381
सूर्य राशि (हिन्दू)	कुंभ
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कुंभ
अयनांश	023-37-15
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023-26-29
साम्पातिक काल	05 : 43 : 02

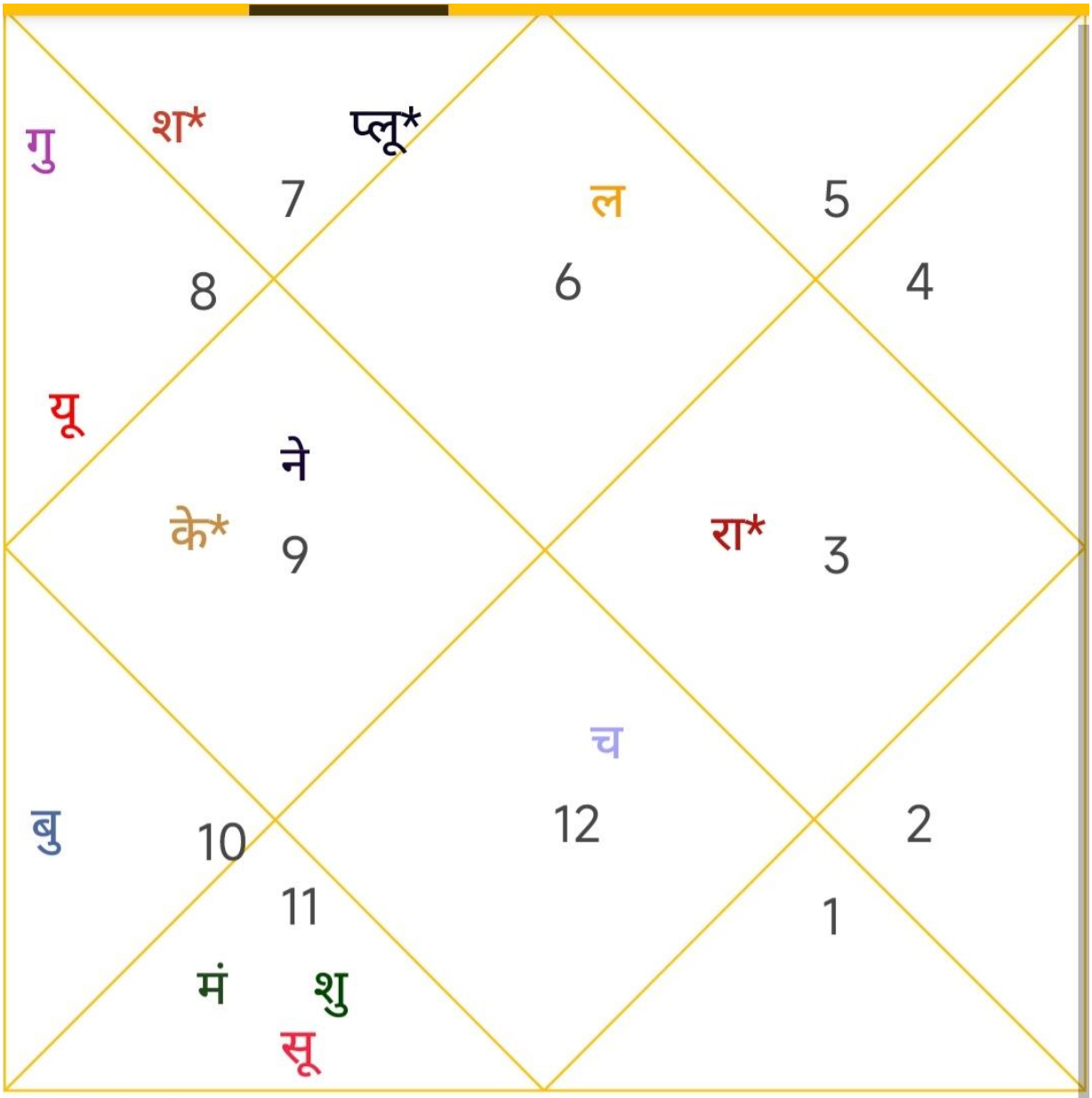
विंशोत्तरी अंतर दशा

के/के	19/05/2021
के/शु	19/07/2022
के/सू	26/11/2022
के/च	26/06/2023
के/मं	22/11/2023
के/रा	10/12/2024
के/गु	16/11/2025
के/श	26/12/2026
के/बु	22/12/2027

विंशोत्तरी अंतर्दशा

शु/शु	22/04/2031
शु/सू	22/04/2032
शु/च	22/12/2033
शु/मं	22/02/2035
शु/रा	22/02/2038
शु/गु	22/10/2040
शु/श	22/12/2043
शु/बु	22/10/2046
शु/के	22/12/2047

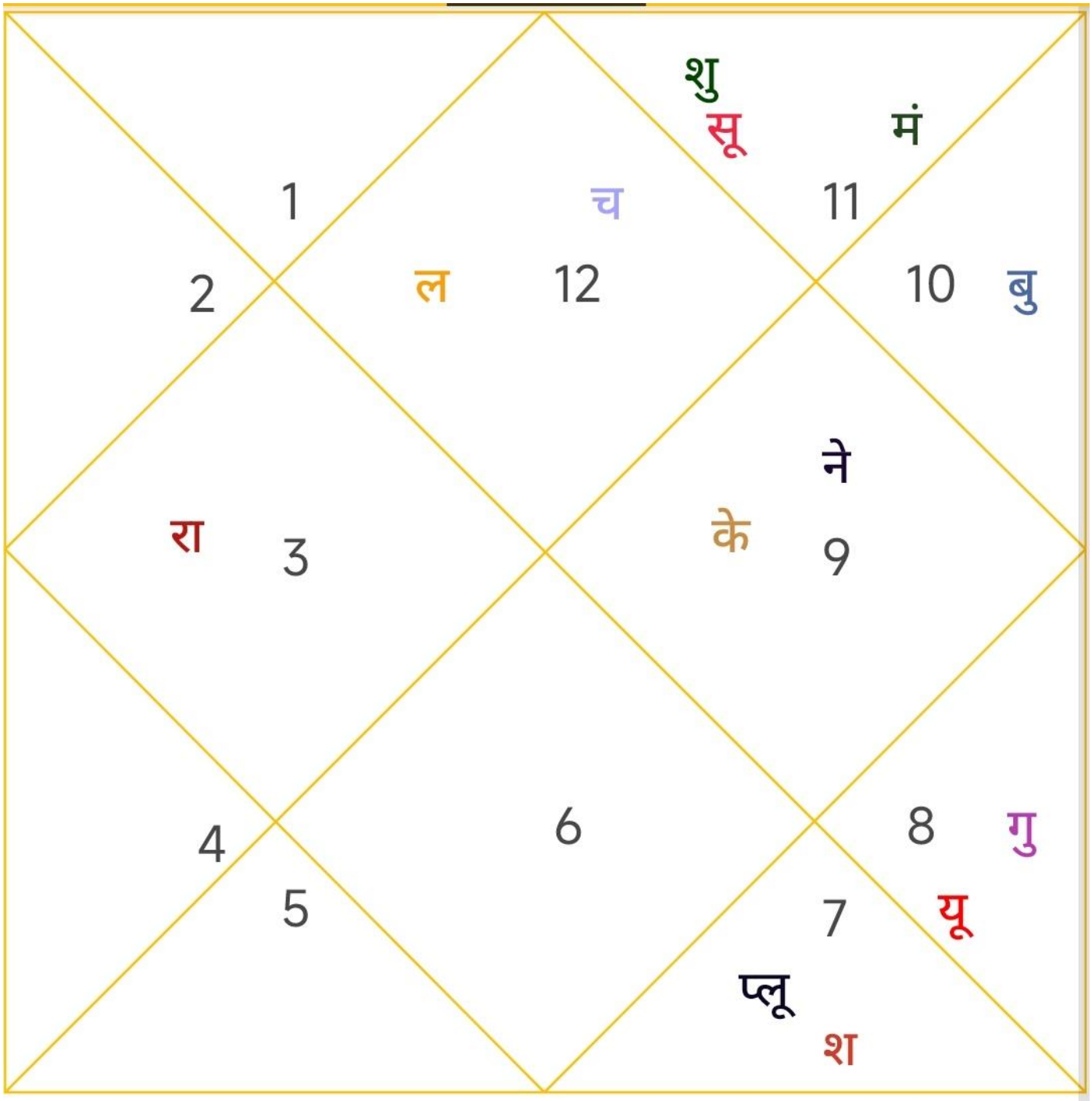
लग्न कुण्डली



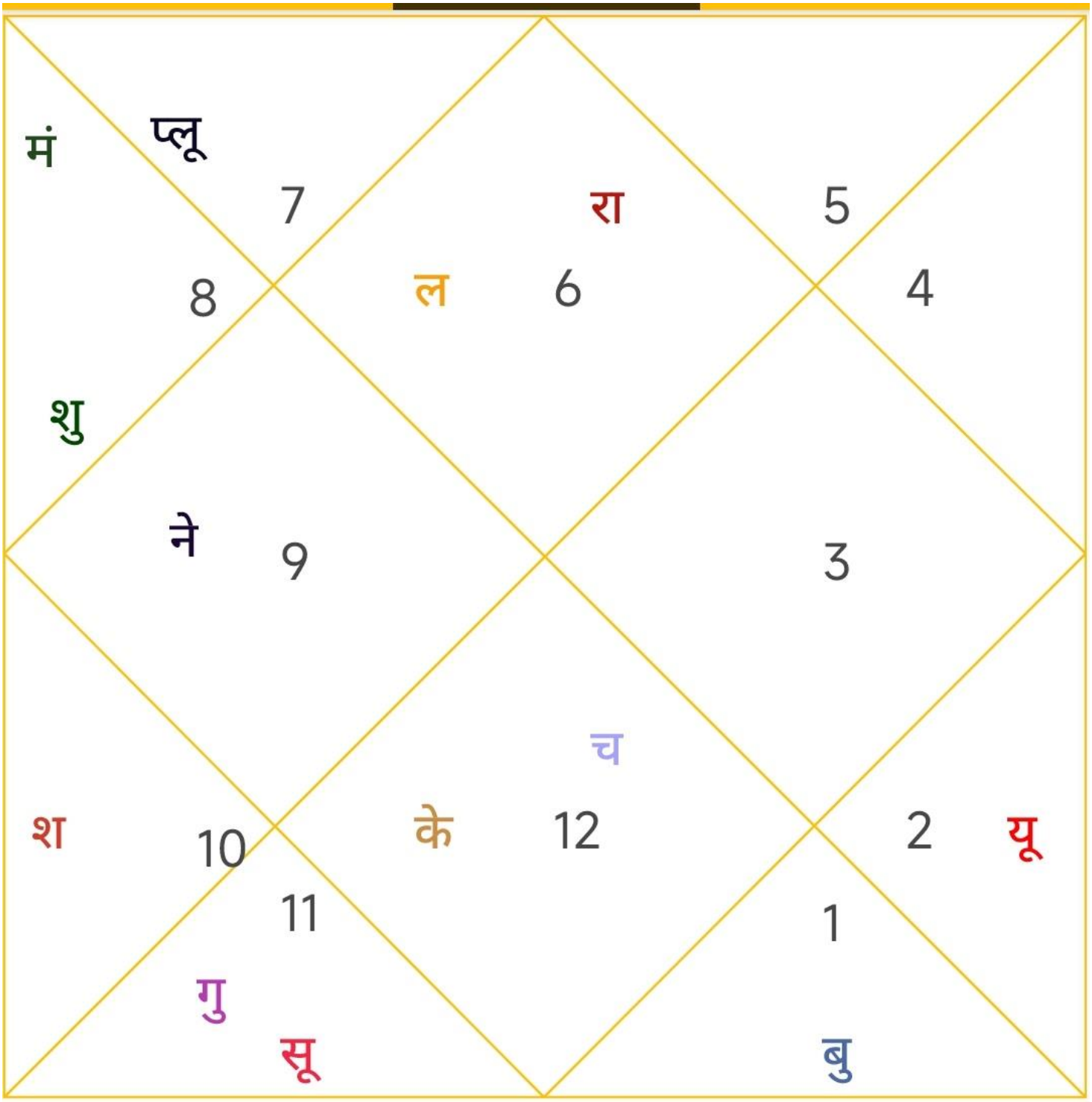
* वक्री ^ अस्त

ल	02°38'36"	सू	02°44'52"	च	01°47'18"
मं	29°07'38"	बु	07°53'34"	गु	14°53'37"
शु	27°23'46"	श	10°49'18"	रा	07°49'14"
के	07°49'14"	यू	15°12'18"	ने	05°02'46"
प्लू	05°49'52"				

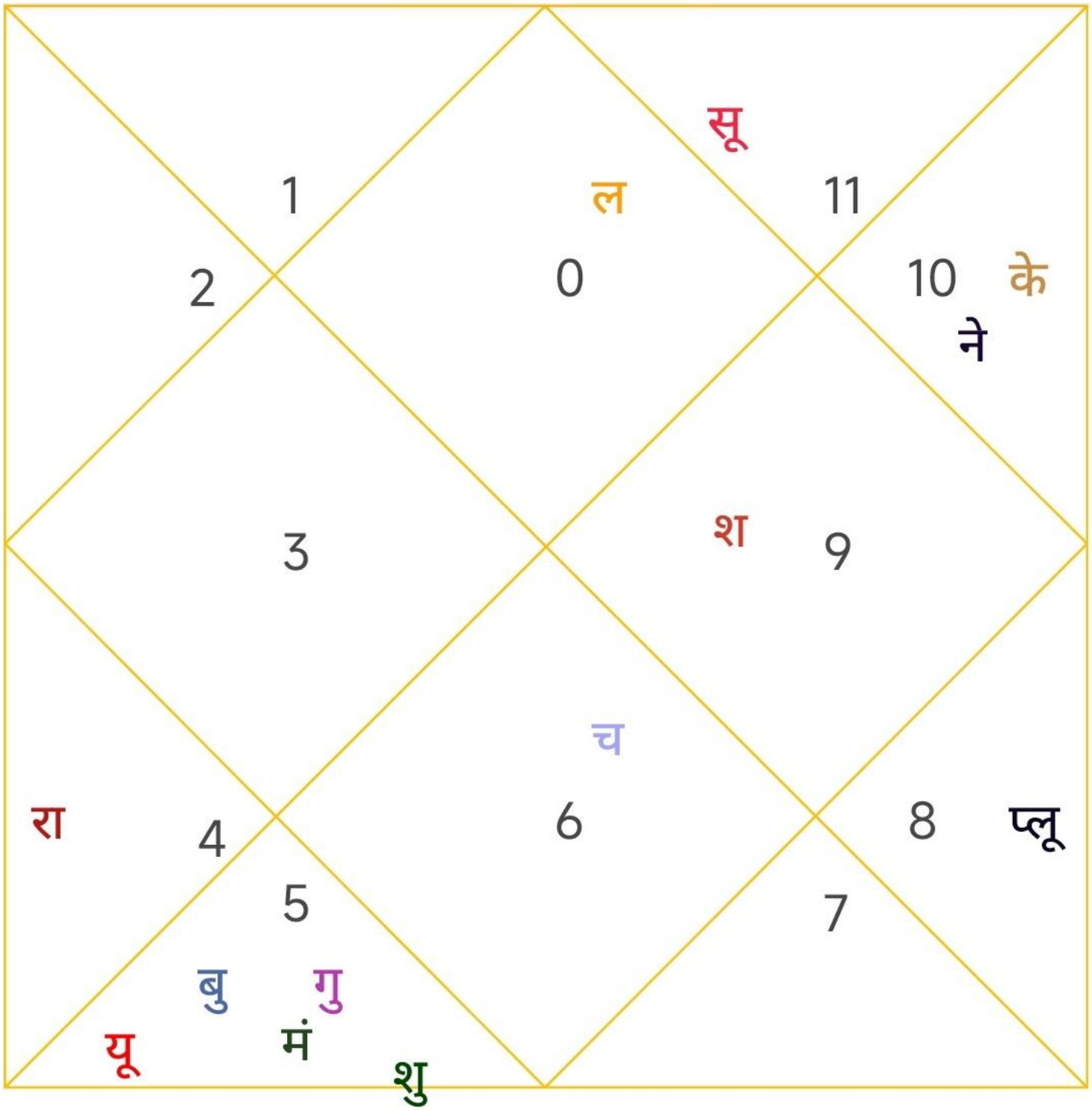
चंद्र कुण्डली



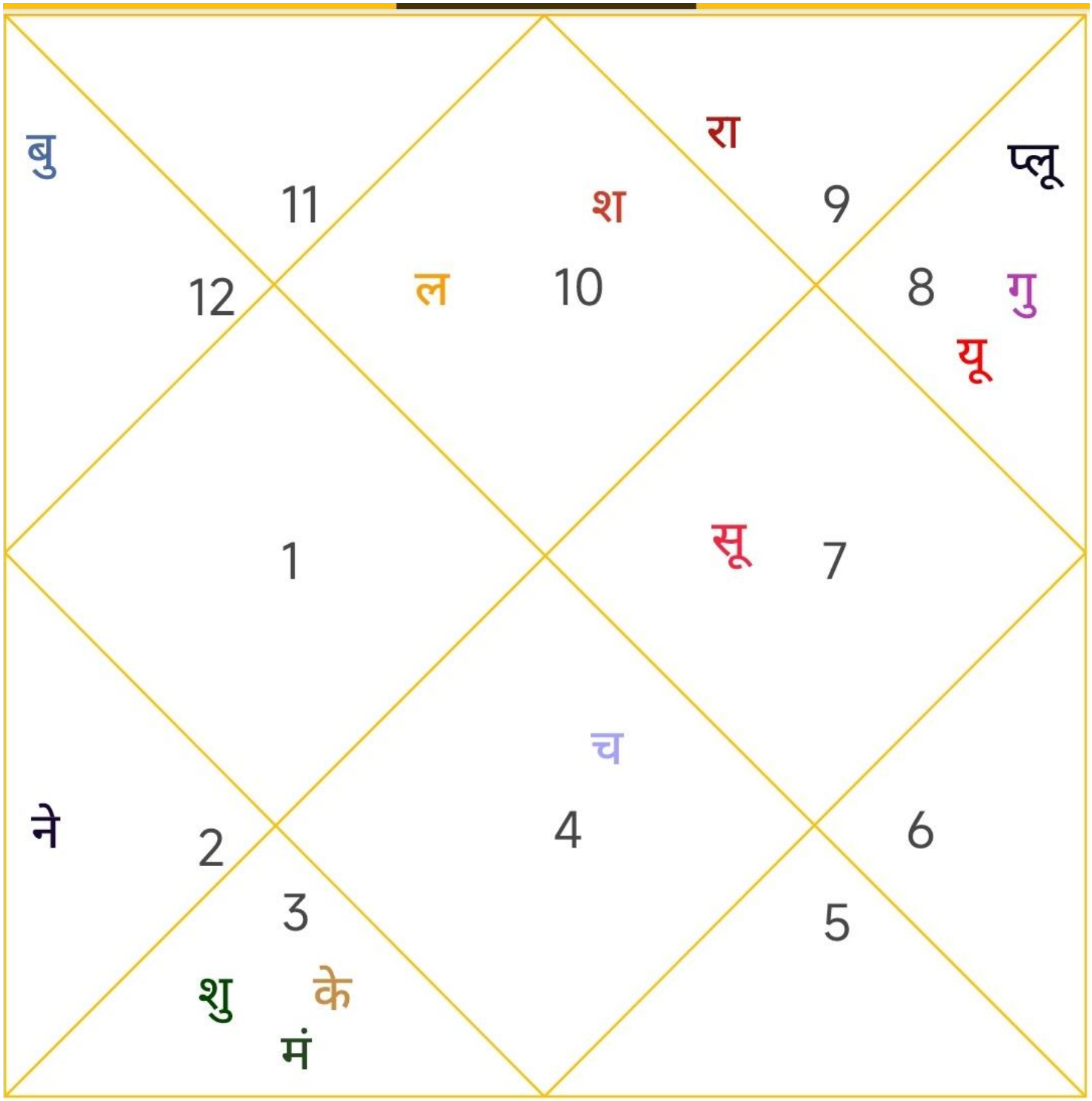
चतुर्थान्श कुंडली



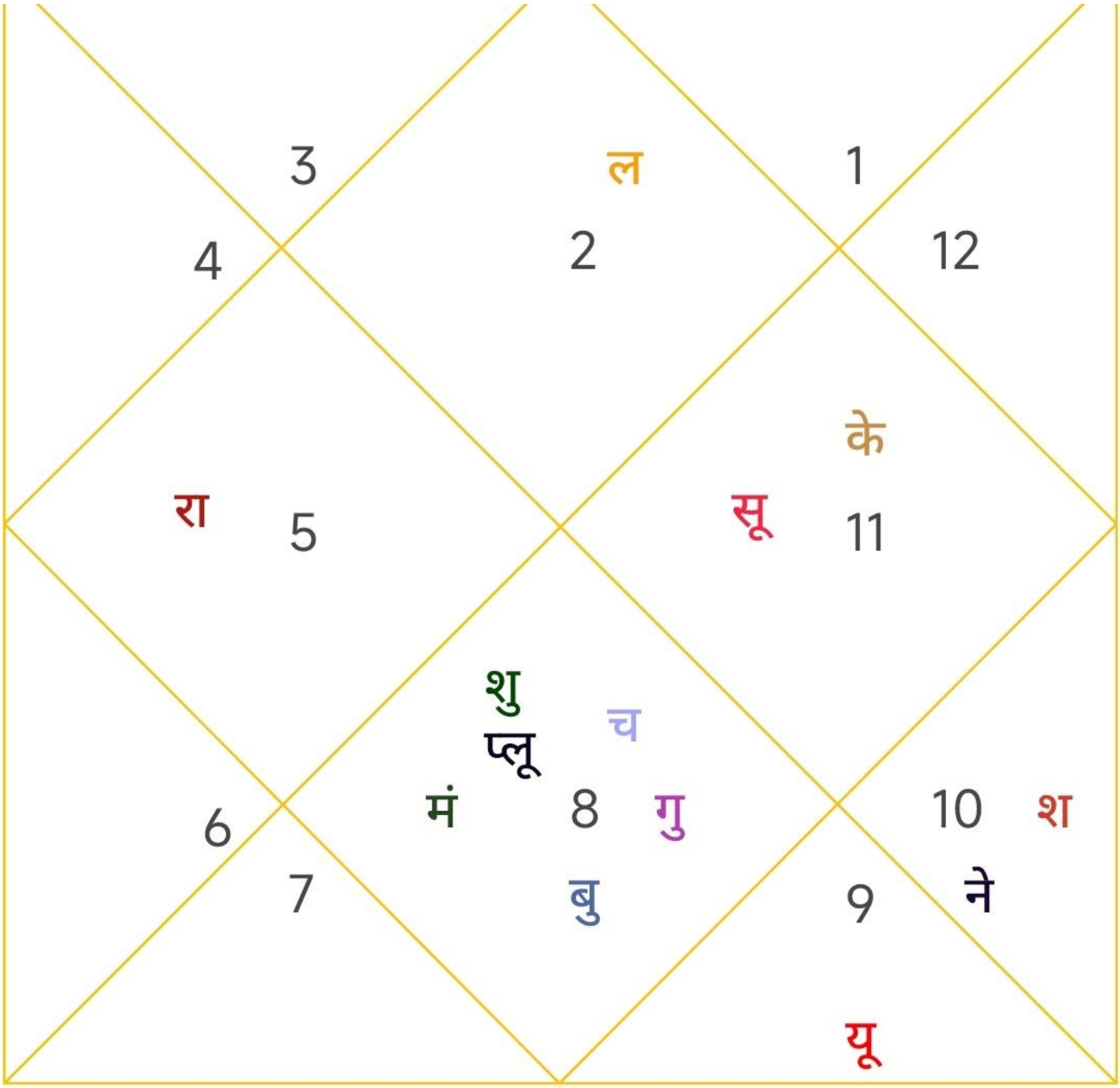
सप्तमांश कुंडली



नवमांश कुण्डली



दशमांश कुंडली



*** संगीता वर्मा ***

लग्न एवं दशम भाव, भावेश : लग्न में कन्या राशि है जिसका स्वामी बुद्ध शुभ त्रिकोण पंचम भाव में स्थित है, लग्न पर चंद्रमा एवं मंगल की दृष्टि पड़ रही है, लग्नेश बुध का नवांशेश गुरु है, इसलिए आपकी लंबाई मीडियम होगी रंग गोरा होगा आप सुंदर भी होंगी इसके अलावा देखने में आपकी उम्र हमेशा कम प्रतीत होगी, स्वभाव हंसमुख होगा,

लग्नेश बुध जो बुद्धि का कारक भी है और यह बुध पंचम भाव में यानी बुद्धि विवेक के भाव में स्थित है तो फिर ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से बुद्धिमान होता है ऐसा व्यक्ति बहुत ही सोच

विचार कर निर्णय लेता है, दूसरे लोग भी ऐसे व्यक्ति से सलाह लेना पसंद करते हैं, ऐसे लोग कलात्मक भी होते हैं

बुद्ध का पंचम स्थान में मित्र राशि में स्थित होना पूर्व जन्म के पुण्य दर्शाता है, ऐसा व्यक्ति स्वत: ही भाग्यवान होता है किंतु यह बुद्ध षड्बल में बहुत ही दुर्बल होने के कारण और पंचम भाव भी भाव बल की दृष्टि से दुर्बल होने के कारण भाग्य में कमी करता है, अतः आपको ज्यादा भाग्यवान तो नहीं कहा जा सकता किंतु फिर भी इतनी भाग्यवान तो हैं की जीवन की कठिनाइयों पर आप विजय प्राप्त करेंगी,

लग्नेश एवं दशमेश बुध का पंचम स्थान में शनि की राशि में स्थित होना यह भी दर्शाता है

कि आपका रुझान सात्विक तंत्र पूजा की ओर होगा, आप धार्मिक स्वभाव की होंगी

बुध इस कुंडली का दशमेश होकर दशम से अष्टम भाव में स्थित है और यह षड्बल में भी बहुत ही कमजोर है इसके अलावा नवांश कुंडली में यह नीच राशि में भी स्थित हो गया है इसलिए नौकरी अथवा व्यवसाय की दृष्टि से यह अच्छी स्थिति नहीं है ऐसे व्यक्ति को आजीविका के संबंध में अवरोध प्राप्त होते हैं, दशम स्थान में स्थित राहु भी आजीविका के क्षेत्र में स्थायित्व प्रदान नहीं करता है यह भी अवरोध का कारण बनता है, जीवन में कुंठा एवं निराशा भी प्राप्त होती है, किंतु बुध का

लग्नेश एवं दशमेश होकर पंचम भाव में स्थित होना संतान की दृष्टि से बहुत ही अच्छा है ।

द्वितीय एवं नवम भाव, भावेश : द्वितीय भाव में पंचमेश शनि उच्च राशि में होने के कारण धन-संपत्ति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है किंतु शनि इस कुंडली का षष्ठेश होने कारण और द्वितीयेश के साथ राशि परिवर्तन करने के कारण यह कर्ज भी ला खड़ा करेगा,

शुक्र इस कुंडली का द्वितीय एवं नवम भाव का स्वामी होकर षष्ठ स्थान में स्थित है,

द्वितीयेश शुक्र का छठे भाव में स्थित होना अनैतिक तरीके से धन की प्राप्ति दर्शाता है,

नवमेश शुक्र का छठे स्थान में स्थित होना पैतृक संपत्ति या उत्तराधिकार से संबंधित न्यायिक अवरोध भी दर्शाता है, अर्थात पैतृक संपत्ति या उत्तराधिकार के लिए, (उत्तराधिकार पिता से भी हो सकता है और पति से भी) आपको न्यायालय जाना पड़ सकता है, यानी कि बिना न्यायालय के आपको पैतृक अथवा उत्तराधिकार से संपत्ति प्राप्त नहीं होगी

द्वितीयेश शुक्र और सूर्य का छठे भाव में पीड़ित होना एवं द्वितीय भाव और द्वादश भाव का

पीड़ित होना यह दर्शाता है की आपकी आंखों में कोई समस्या हो सकती है

द्वितीयेश शुक्र एवं द्वितीय भाव दोनों का पीड़ित होना यह भी दर्शाता है कि आपको दांतो से संबंधित छोटी मोटी समस्या भी हो सकती है

नवमेश एवं द्वितीयेश शुक्र का छठे भाव में पीड़ित होना, द्वितीय भाव में शनि का वक्री होकर स्थित होना यह भी दर्शाता है कि आपके पिता कोई ऐसी नौकरी करते थे जहां उन्हें अनैतिक रूप से भी धन प्राप्त होता था इसके

अलावा यह स्थिति पिता के स्वास्थ्य के लिए अरिष्ट की स्थिति है

तृतीय एवं अष्टम भाव, भावेश : तृतीय भाव में स्थित गुरु भी आपके पिता के लिए अरिष्ट दायक हो सकता है, आपकी पाचन शक्ति अच्छी नहीं होगी, काल पुरुष की कुंडली के नवमेश गुरु का नवम से सप्तम भाव में पाप कर्तरी में स्थित होना और नवमेश शुक्र का छठे भाव में पाप पीड़ित होना यह भी दर्शाता है कि पिता से आपके संबंध अच्छे नहीं होंगे

तृतीयेश मंगल का छठे स्थान में स्थित होना, भाइयों से संबंध खराब करता है, छठा स्थान शत्रुता का स्थान है इसलिए आपको सलाह दी जाती है कि किसी के साथ लड़ाई झगड़ा ना करें अन्यथा आप बहुत उग्र हो जाएंगी और बात बिगड़ सकती है, किसी झंझट में आप फंस सकती हैं, क्योंकि मंगल छठे भाव में द्वादशेष के साथ स्थित है

मंगल अष्टम भाव का स्वामी भी है इसलिए आपको पेट अथवा urinal disease हो सकती है,

आपका दांपत्य जीवन भी अच्छा नहीं होगा ।

चतुर्थ एवं सप्तम भाव, भावेश : चतुर्थ भाव में केतु स्थित है और शनि की दृष्टि भी है, इन दोनों की क्रूर प्रभाव के कारण और चतुर्थेश गुरु के चतुर्थ भाव से द्वादश भाव में स्थित होने के कारण गृहस्थ जीवन विघ्नों एवं अशांति से पूर्ण होगा

चतुर्थेश गुरु चतुर्थ भाव से द्वादश भाव में स्थित होने के कारण व्यक्ति को स्वयं के घर का सुख प्राप्त नहीं होता है, शिक्षा भी बहुत अच्छी नहीं होती है, माता से भी प्राप्त होने वाले मातृसुख में कमी आती है, या माता के साथ वैचारिक मतभेद होते हैं

यह गुरु इस कुंडली का सप्तमेश होकर तृतीय स्थान में पाप कर्तरी में स्थित है जो वैवाहिक जीवन में समस्या देता है ।

पंचम षष्ठ भाव, भावेश : पंचम स्थान में स्थित बुध व्यक्ति को एक से ज्यादा पुत्र देता है, बुद्धि कारक बुद्ध का पंचम स्थान में स्थित होना व्यक्ति को बहुत ही बुद्धिमान बनाता है, इसके साथ ही लॉटरी या शेयर मार्केट से भी व्यक्ति को लाभ होता है

पंचमेश एवं षष्ठेश शनि का कुटुंब भाव में वक्री होना परिवार से मतभेद दर्शाता है, ऐसा व्यक्ति धन कमाने के लिए अपनी बुद्धि का बहुत

अच्छा प्रयोग करता है, किंतु षष्ठेश होकर द्वितीय स्थान में वक्री होना यह भी दर्शाता है कि व्यक्ति के पास कितना भी धन हो लेकिन वह धन बचाने में या संचित करने में असफल रहता है, उसके पास धन स्थिर नहीं होता है, यह शनि पेट, आंख एवं दांतो से संबंधित रोग दे सकता है

छठे एवं द्वितीय भाव के स्वामीओं का राशि परिवर्तन यह भी दर्शाता है कि आपको न्यायपालिका के द्वारा धन की प्राप्ति हो सकती है अर्थात किसी कोर्ट केस के द्वारा आपको धन की प्राप्ति होगी

षष्ठ स्थान में मंगल सूर्य एवं शुक्र की स्थिति आपको बी.पी. का मरीज बना सकती है ।

एकादश भाव, भावेश : एकादशेष का सप्तम स्थान में जाना यह दर्शाता है कि :

वैवाहिक जीवन समस्या ग्रस्त हो सकता है

व्यापार में सफलता प्राप्त होगी

साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा ।

द्वादश भाव, भावेश : द्वादशेष सूर्य का षष्ठ स्थान में अष्टमेश मंगल एवं मारक भाव द्वितीय के स्वामी शुक्र के साथ स्थित होना जीवन में किसी न किसी लड़ाई झगड़े अथवा कोर्ट केस, पुलिस केस की संभावना दर्शाता है ।

**** संतान ****

पंचम स्थान में मित्र राशि में लग्नेश बुध के स्थित होने से संतान का स्वास्थ्य अच्छा होगा, रंग गोरा होगा और स्वभाव से हंसमुख होगा, बुद्धिमान होगा

पंचमेश शनि द्वितीय भाव में स्थित है इसका अर्थ यह है कि संतान का लग्नेश एवं द्वितीयेश दशम भाव में स्थित है, यह एक बहुत ही सशक्त एवं शुभ स्थिति है जो संतान को श्रेष्ठ एवं संपत्ति वान बनाती है ।

***** दशाफल ******

इस समय केतु की महादशा चल रही है जो 22 दिसंबर 2020 से शुरू हुई है और 22 दिसंबर 2027 तक चलेगी,

केतू एक क्रूर ग्रह है और यह चतुर्थ भाव में शनि के द्वारा पीड़ित भी है, केतु का राशि स्वामी गुरु चतुर्थ से द्वादश भाव में स्थित है, केतु को अपने राशि स्वामी गुरु का फल करना है तो केतु चतुर्थ, सप्तम एवं तृतीय भाव का फल करेगा और यह फल अच्छा नहीं होगा और उसका कारण यह है कि केतु एक तो पहले ही क्रूर ग्रह है और दूसरी बात यह कि शनि के द्वारा पीड़ित भी है, नवांश कुंडली में छठे भाव में चला गया है और मंगल के द्वारा पीड़ित हो

गया है, चतुर्थ भाव घर के सुख का भाव है तो केतु की महादशा में घर के सुख में कमी आएगी क्योंकि केतु का राशि स्वामी गुरु सप्तम भाव का स्वामी भी है इसलिए केतु की महादशा में वैवाहिक जीवन में भी समस्या होगी, इसका यह भी अर्थ नहीं है की केतु का पूरा समय बुरा ही जाएगा, केतु की महादशा में जब जब शुभ ग्रहों की अंतर्दशा आएगी तब तब शुभ फल की प्राप्ति भी होगी, लेकिन कुल मिलाकर केतु की महादशा को अच्छा नहीं माना जा सकता है ।

केतू/चंद्र : 26.11.2022 to 26.06.2023

इस समय केतु में चंद्रमा की अंतर्दशा चल रही है, इस दशा में आपको धन लाभ होगा, और यह धन पति के द्वारा भी मिल सकता है, इस दशा में आप व्यापार शुरू कर सकती हैं, हालांकि

मानसिक तनाव भी इस दशा में रहेगा क्योंकि चंद्रमा नवांश कुंडली के सप्तम भाव में स्थित है और इस पर शनि की दृष्टि भी है तो इसलिए वैवाहिक जीवन में तनाव भी रहेगा ।

केतू/मंगल : 26.06.2023 to 22.11.2023

मंगल की अंतर्दशा में परिवार में जमीन जायदाद को लेकर वाद विवाद हो सकता है, अतः आपको सावधानी रखनी चाहिए ।

केतू/राहु : 22.11.2023 to 10.12.2024

राहु की अंतर्दशा में आपको दशम भाव के शुभ फल प्राप्त होंगे यानी आजीविका के संबंध में आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे लेकिन यह राहु नवांश कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है

और मंगल के द्वारा पीड़ित भी इसलिए वैवाहिक जीवन के लिए राहु की अंतर्दशा समस्या देने वाली होगी, यह राहु की अंतर्दशा आपके पति के लिए भी अच्छी नहीं होगी ।

केतू/गुरु : 10.12.2024 to 16.11.2025

गुरु की अंतर्दशा में आप अपने रहने का स्थान परिवर्तन कर सकती हैं, खासकर 22 जुलाई 2025 से 26 सितंबर 2025 के बीच ।

केतू/शनि : 16.11.2025 to 26.12.2026

शनि की अंतर्दशा में आपको धन संपत्ति प्राप्त हो सकती है ।

केतू/बुध : 26.12.2026 to 22.12.2027

बुध की अंतर्दशा आपके लिए धन एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी होगी यदि इस समय आप कोई नया व्यापार करना चाहें तो नए व्यापार की दृष्टि से आपके लिए अच्छा समय होगा, और यदि कोई नौकरी या व्यापार आप कर रही हैं तो उसके लिए भी एवं धन एवं कैरियर की दृष्टि से यह समय अच्छा होगा ।

शुक्र महादशा : 22.12.2027 to 22.12.2047

केतु के बाद शुक्र की महादशा शुरू होगी जो 20 वर्षों तक रहेगी, शुक्र की महादशा आपके धन की दृष्टि से तो अच्छी है लेकिन स्वास्थ्य के मामले में इसे अच्छा नहीं कहा जा सकता है, शुक्र महादशा का पूर्वार्ध भी संघर्ष में गुजरेगा

लेकिन इसका उत्तरार्ध समय आपके लिए बहुत अच्छा होगा ।

शुक्र/शुक्र : 22.12.2027 to 22.04.2031

शुक्र की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा सर्वप्रथम आपके पति के लिए अच्छी नहीं होगी क्योंकि यह शुक्र आपके पति का तृतीयेश एवं अष्टमेश होकर द्वादश भाव में पीड़ित है

आपके पेट में समस्या हो सकती है, धन की दृष्टि से यह सामान्य दशा होगी

शुक्र/सूर्य : 22.04.20231 to 22.04.2032

शुक्र में सूर्य की अंतर्दशा आपकी आंखों के लिए अच्छी नहीं है इसलिए अपनी आंखों का ख्याल

रखना होगा, पेट से संबंधित समस्या भी रहेगी, पति के साथ संबंध भी अच्छे नहीं होंगे ।

शुक्र/चंद्र : 22.04.2032 to 22.12.2033

चंद्रमा की अंतर्दशा में आपको धन की प्राप्ति होगी, व्यापार एवं साझेदारी की दृष्टि से भी यह दशा अच्छी होगी

यह दशा आपके पति के लिए भी अच्छी दशा है, हो सकता है कि इस समय तक वह वापस घर भी आ जाएं ।

शुक्र/ मंगल : 22.12.2033 to 22.02.2035

शुक्र में मंगल की अंतर्दशा किसी भी दृष्टि से अच्छी नहीं है यहां आपको सावधानी रखनी होगी परिवार में किसी भी तरह का वाद विवाद हो सकता है, आपको चोट लग सकती है, पेट में समस्या होगी, urinal disease हो सकती है ।

शुक्र/ राहु : 22.02.2035 to 22.02.2038

राहु की अंतर्दशा लगभग सभी मामलों में अच्छी ही रहेगी धन एवं कैरियर की दृष्टि से भी यह दशा आपके लिए अच्छी है ।

शुक्र/ गुरु : 22.02.2038 to 22.10.2040

गुरु की अंतर्दशा वैवाहिक जीवन एवं धन दोनों ही दृष्टि से अच्छी दशा होगी ।

शुक्र/शनि : 22.10.2040 to 22.12.2043

शनि की अंतर्दशा में आपको किसी भी तरह के उत्तराधिकार से संबंधित संपत्ति प्राप्त हो सकती है, यह शनि की अंतर्दशा धन के मामले में आपके लिए अच्छी दशा ।

22.12.2043 to 22.12.2047 आगे आने वाली अंतर दशाएं बुध एवं केतु की भी दशाएं अच्छी ही हैं किसी भी तरह की कोई हानि नहीं होगी, धन एवं स्वास्थ्य दोनों अच्छे रहेंगे ।

केतू/मंगल, शुक्र/शुक्र, शुक्र/मंगल इन दशाओं में पिताजी के स्वास्थ्य का खयाल रखें ।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि आपका संपूर्ण जीवन स्वस्थ एवं खुशहाल गुजरे

****

“**********”

||ॐ भूर् भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ||

“**********”

THIS HOROSCOPE IS CREATED BY MR. MANOJ KUMAR PANDEY, TO STAY CONNECTED WITH US, FOLLOW US ON ALL SOCIAL MEDIA BY CLICKING ON THE LINKS GIVEN BELOW.



Follow us on :-

YOUTUBE : Jyotish and Research

FACEBOOK GROUP : Jyotish and Research by Vedic Jyotish

THANK YOU !!